दुनिया में सतनाम के मानने वाले एक हों !

गुरू बालकदास जी का बलिदान व्यर्थ नहीं जायेगा

गुरू बालकदास जी का 154 वॉ बलिदान दिवस

के अनसर पर

बलिदान की सार्थकता

विषय पर परिचर्चा

तिथी ः दिनांक 28 मार्च 2013 से 30 मार्च 2014 तक

स्थान ःछत्तीसगढ़ के सभी जिला व भांठापारा में

आदरणीय संत जनों !

ऐसे तो दुनिया भर में करोड़ों लोग रोज पैदा होते है और लगभग उतने ही मरते हैं। इनमें से अधिकतर लोग अपने लिए जीते है जिनमें से शायद ही किसी को हम जान पाते है। इनमें से कुछ लोग ऐसे भी होते है जो सतपथी मार्गदाता होते है जिन्हें हम महापुरूष कहते है। कुछ लोग शोषण व अन्याय- अत्याचार के खिलाफ संघर्षशील होते है उन्हें हम प्रणेता या उद्धारक कहते है। कुछ ऐसे भी होते है जो भाग्य और भगवान के आड़ मे चलाये जा रहे शोषण के ब्रह्मास्त्र, रूढ़िवाद और अंधविश्वास की धार को भोथा कर, जन मानस को शोषकों से मुक्ति दिलाते हुए अपने अमर वाणियों से इंसानियत की राह दिखाते है उन्हें हम सन्त गुरूओं के नाम से जानते है, पूजनीय व श्रद्धा के पात्र हैं। कुछ लोग जो मानव समाज को उनके मानवीय अधिकार दिलाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर स्वयं कुर्बान हो जाते हैं जिन्हें हम मसीहा कहते हैं। समय समय पर इन्हीं चन्द लोगों के बलिदान के कारण आज मानव समाज का निर्माण संभव हो सका है अन्यथा इस धरती पर जंगल राज और हैवानियत का बोल बाला होता जहॉ केवल सक्षम ही जीने का हकदार होता और अक्षम मारा जाता।

जहॉ विश्व के इतिहास में आज से लगभग **2000** साल पहले जारों द्वारा यहुदियों के साथ किया जा रहे शोषण और अन्याय अत्याचार के खिलाफ ईसामसीह ने इंसानियत की रक्षा के लिए शोषकों के सामने निर्भयता पूर्वक सीना तान कर खड़े हो गये। जारों ने उन्हें क्रूश पर जिन्दा लेटाकर उनके हाथ पैर व पूरे शरीर में तावूज कील ठोक कर तीन दिन तक चौराहे पर लटका दिया। आज वही क्रूश का क्रास विश्व में प्रेम व भाईचारा के साथ इंसानियत का पैगाम बन गया है। शिक्षा में अग्रणी, दिन दुखियों की सेवा मिशन कहलाता है जिसका श्रेय उनके प्रवुद्ध अनुयायियों को जाता है।

वहीं भारत के इतिहास में सन् **1672** को गुरू तेगवहादुर ने इंसानियत की रक्षा के लिए औरंगजेव द्वारा कितना भी आतंकित किये जाने पर भी झुके नहीं और अपना सिर झुकाने के बजाय सिर कटाना उचित समझते हुए लालकिला के सामने 'वाहे गुरू सतनाम' लिखकर पट्टी गले में बांधकर सिर कटाने में उफ तक नहीं किए। गुरू के साथ- साथ उनके शिष्यों को यह श्रेय जाता है जिन्होंने उनका बलिदान खाली नहीं जाने दिया, आज वहीं लालकिला के सामने शीशगंज गुरूद्वारा है और पार्लियामेंट के पास गुरूद्वारा रकावगंज है जहॉ हजारों लोग रोज उनकी कुर्बानी पर माथा टेकने जाते हैं। लेकिन सिर काटने वाला औरंगजेब घृणा का पात्र है उनको मानना तो दूर कोई नाम लेने वाला नहीं है क्योंकि बलिदान

कभी खाली नहीं जाता बस समय के साथ एहशास करने व सार्थक बनाने की जरूरत है। इसी **1672** में औरंगजेब द्वारा जुल्म ज्यादती व अन्याय अत्याचार के साथ जजिया कर लगाये जाने के विरूद्ध नारनौल का सतनामी विद्रोह ऐतिहासिक घटना है जहॉ हजारों लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी पर मुगल सल्तनत के सामने घुटने नही टेके। व्यापार में अग्रणी, आज उत्तरभारत के लाखों साध सतनामी कभी होली नहीं मनाते बल्कि चार दिन तक भण्डारा आयोजित कर अपने शहीदों के याद में सतनाम भजन करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

छत्तीसगढ़ की बात करें तो यहॉ भी शहीद वीरनारायण सिंह को भुलाया नहीं जा सकता जिन्होंने **1856** में भीषण अकाल के दौरान चारों ओर भूख से त्राहि त्राहि मचा हुआ था, जमाखोर माखन मिश्रा हजारों टन अनाज अपनी गोदाम में छिपाये रखा था। जनता के साथ बीरनारायणसिंह ने स्वयं अर्जी किया लेकिन शोषक के मन में दया मानवता कहॉ? जनता की भूख और दुख, बीरनारायणसिंह से देखी नहीं गयी। अंततःउन्होंने गोदाम तोड़वाकर भूखी जनता में अनाज बंटवा दिया। सारे सवर्ण मिलकर बीरनारायणसिंह को डकैती का इल्जाम लगाकर तत्कालिन अंग्रेजी हुकुमत को सौंप दिया और उन्हें **19** दिसम्बर **1857** को रायपुर में सरे आम चौक पर जिन्दा तोप से उड़ा दिया गया जो शहीद चौक के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा बौद्धकालीन ज्ञान केन्द्र महाकोशल की राजधानी सिरपुर व हैहैय वंशी गौरवशाली इतिहास, शहीद गेंदसिंह मारिया विद्रोह, खूबचन्द बघेल आदि इस बात का सबूत है कि यहॉ के वीर सपूतों ने हमेशा अन्याय – अत्याचार के विरूद्ध संघर्षरत व गौरवान्वित करते रहे है। यह बात अलग है कि सामाजिक चेतना के अभाव में उनके अनुयायियों जिनको, कुर्बानी का लाभ मिलना चाहिये था, उन्हें आज भी नहीं मिल पाया। प्रजातंत्र में बहुसंख्यक होते हुए सत्ता से कोसों दूर महुआ सलफी के रंग में डूबे भूखे अधनंगे जंगल में मंगल मना रहे हैं।

आज सतनामियों के इतिहास में राजा गुरू बालकदास का बलिदान सार्थक न बन पाया तो भी भुलाया नहीं जा सकता। आप सन् **1825** से रावटी लगाकर तत्कालीन ब्याप्त रूढ़िवाद और अंधविश्वास के साये में पल रही *विषमतावदी समाज व्यवस्था, अन्याय– अत्याचार* आदि के खिलाफ मानवीय अधिकार *समता, सम्मान एवं भागीदारी के लिए* संघर्षरत, *प्रेम और भाइचारा* का संदेश देते हुए गांव –गांव में सतनाम आंदोलन चला रहे थे। फलस्वरूप गांव –गांव की जनता, आपसी भेदभाव को त्यागकर, सतनाम आन्दोलन में शामिल होने लगे थे। सती प्रथा के विरोध में नारियो को सम्मान और बराबरी का हक दिलाने हेतु जन चेतना अभियान चलाये फलस्वरूप अंग्रेजों द्वारा सन् **1829** में सती प्रथा को प्रबिंधित करना पड़ा और गुरू बालकदास जी को **राजा गुरू** की पदवी से नवाजा गया। आपने जनेऊ और तलवार धारण कर निर्भिकता के साथ तत्कालिन रूढ़ीवादी खड़ी व्यवस्था पर कठोर प्रहार किया। सतनाम आन्दोलन अपने पटरी पर तेज गति से चलने लगा। जातिवादी व्यवस्था चरमराने लगी और सामंती ताकतों व शोषक वर्ग में खलभली मच गयी और सतनाम आंदोलन को रोक पाने में असफल घबराहट में गुरू बालकदास की हत्या का षडयंत्र करने लगे।

इसी बीच भुजबल गौटिया के साथ एक घटना घटी। वे घोड़े में सवार होकर (मुगेली के पास) पुरान नामक गांव से गुजर रहे थे। वहॉ के (दर्रेहा क्षत्री) ठाकुरों ने अच्छे वेषभुषा और घुड़सवारी को देखकर उन्हें राम राम शब्द से अभिनंदन किया जिसका जवाब भुजबल ने सतनाम से दिया। यह ठाकुरों को नागवार गया और तत्काल उन्हें रोक कर घोड़े से ऊतार कर पैदल चलने को मजबूर किया। भुजबल ने गांव की सीमा पार करने के बाद ठाकुरों को चेताया कि ः ये जो तुमने मुझे घोड़े से उतार कर पैदल चलने में मजबूर किया है इसे किसी ने देखा नहीं है ये अच्छा होगा कि मै तुम्हारे गांव से ठीक एक माह बाद डोला लेकर बरात गुजारूंगा तब तुम सबके सामने रोक लेना, तभी तुम्हारी औकात लोगों के सामने पता चलेगा। एक माह बाद भुजबल ने अपने बेटे की बारात डोला में घुड़सवारी के साथ उसी गांव से वहॉ के ठाकुरों को

रौदते हुए गुजारा। आज भी वह डोळा भण्डारपुरी में मौजुद है। सामंती शोषकों में चारों ओर हाय तौबा मच गयी और इन सबके पीछे गुरू बालकदास का हाथ होने का एहसास होने लगा और उनकी हत्या का षडयंत्र तेज होने लगा।

गुरू बालकदास दुश्मन से सावधान रहते हुए किसी के घर न जाकर केवल अपने रावटी में ही अपने अंगरक्षकों के साथ भोजन ग्रहण करते थे। पुरान के पास ही औराबांधा गांव में एक घर का सतनामी निवास करता था जो वहॉ का कोतवाल भी था। सवर्णो ने षडयंत्र के तहत उसे गुरू बालकदास को अपने घर आमंत्रण करने के लिए भड़काया। वह उनकी चाल को समझ नहीं पाया और अपनी अटूट श्रद्धा का आश्रय लेते हुए, अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित कर गुरू बालकदास को आने के लिए मजबूर किया। पता चलने पर मुंगेली के लोगों ने औराबांधा जाने से उन्हें मना भी किया। उसके बावजूद वे समाज के मनोबल को बढ़ाने हेतु, सतनाम आन्दोलन के हित में गुरू तेगबहादुर की तरह स्वयं को कुर्बान करना उचित समझे। **28 मार्च सन् 1860** का वह काली रात 11 बजे रावटी से अपने दो अंगरक्षक सरहा जोधाई के साथ औराबॉधा अपने शिष्य के घर पहुॅचे। घृणित मानसिकता के क्रूर हिंसक सवर्ण चोरो की तरह छिपकर गुरू बालकदास पर हमला कर दिये और अपने षडयंत्र में कामयाब रहे। बड़े निर्दयतापूर्वक उनके अंग अंग को भाला बरछी से भेदा गया। सतनाम के वीर सिपाही बलिदानी राजा गुरू बालकादास अपने अंगरक्षक सरहा–जोधाई के शहीद हो गये। उन्हें कोटि कोटि नमन! "लोग कहते है वीर मरते नहीं, वो मर के अमर हो जाते हैं। कौन कहता है कायर जीते यहॉ, वो जी के भी रोज मर जाते हैं।" आज हमारे सामने गुरू बालकदास जी की बलिदान की सार्थकता सबसे बड़ी चुनौती है। कहीं उनका बलिदान व्यर्थ ना चला जाय।

आप कितना आगे बढ़े है वह उतना महत्व नहीं, महत्व इस बात का है कि आप किस दिशा में आगे बढ़े है। जिस सतधर्म की रक्षा के लिए हमारे सन्त गुरूओं ने अपना सर्वस्व जीवन की आहुति दिया है उसे जन जन तक पहुॅचाना हमारा कर्तव्य है। दुनिया में सतधर्म ही मानव का केवल एक मात्र धर्म है जो बिना किसी विभेद के मानव ही नही अपितु सभी जीवधारी प्राणियों पर बराबर लागू होता है "सत्य आभूषण जानिये सत जीवन व्यवहार, प्रेम दया करूणा क्षमा विनय शील सत सार" जिसके व्यवहार से मन में शांति उत्पन्न होती है, निर्वाण पथ है। इस लोक में रहते हुए सत्य मार्ग पर चलना अपने आप में एक चमत्कार है। दुनिया में सतनाम केवल एक और एक ही है– सतनाम अपने आप में एक क्रान्तिकारी शब्द है। जहॉ –जहॉ सतनाम का पदार्पण हुआ वहॉ वहॉ क्रान्ति का बिगुल बजा है। सतनाम में वह शक्ति है जो इस लोक (धरती) पर रहते हुए परलोक का सपना देखने वालों को जमीन की सच्चाई, व्यवहारिक जगत पर खींच लाती है। अतः आओ हम सब मिलकर प्रेम व भाईचारा के साथ, सतनाम का अमृत पिलाकर, सांप्रदायिकता के विष का बीजनाश करते हुए, मानवता का संदेश जन जन तक पहुॅचाये, ताकि हमारा छत्तीसगढ़ खुशहाल व प्रगतिशील हो सके। यही शांतिपथ है और इसी में सबका कल्याण है।

समस्त मानव समाज का धर्म केवल एक और एक ही है वह है सतधर्म, इसके अलावा शेष सभी मजहब व संप्रदाय है जो केवल अपना और अपने स्वार्थ तक सीमित है। हर व्यक्ति जन्म से पवित्र है क्योंकि वह प्रेम दया करूणा की भावना से ओत प्रोत होता है बढ़ते उम्र के साथ केवल संसर्ग के कारण ही विकार उत्पन्न होते हैं जो स्वार्थी सांप्रदायिक ताकतों के इशारे पर मजहबी बन जाते हैं। भय और भ्रम सांप्रदायिकता का ब्रह्मास्त्र है जो रूढिवाद और अंधविश्वास के सहारे फलता फूलता है, शोषण का उमदा अस्त्र है। सांप्रदायिकता घृणा व विद्वेष के साथ भेदभाव को बढ़ावा देता है जिसके जहर से मनुष्य ईष्यालु, गुस्सैल, विषैला व खतरनाक हिंसक प्राणी बन जाता है। रूढ़िवादी परंपरा के साये में लोग दिन प्रतिदिन मूल संस्कृति, जो हमें प्रकृति के करीब ले जाता है, को भूलते जा रहे है। यह कैसी बिडंबना है कि देवी–

देवताओं के भगदड़ के बीच, यहॉ लोग भूखे व नंगे सोने में मजबूर हैं। लोगों के पास पेट भरने को दाना नहीं, पर शोषक वर्ग भोले –भाले आम जनता को धरम– करम में फंसाकर चारों धाम की यात्रा व कर्मकाण्ड के चक्कर में उलझाकर, सत्ता के गलियारे में ठगी –व्यापार व लूट– पाट का धंधा आराम से चला रहे हैं। अपने –पराये की पाठ पढ़ाकर विभ्रांति फैलाना व विभेद पैदा करना, शोषको का काम है ताकि हम आपस में लड़ते रहें और वे हमारे विभाजन का लाभ लेते हुए सत्ता में बने रहें, अधर्म है। संघर्ष के द्वारा अधर्म का नाश किया जा सकता है। जिस तरह का अधिकार चाहिए उसी तरह का संघर्ष करना होगा।

साथियों हक और हुकुमत के लिए संघर्ष जरूरी है। गुरू घासीदास जी द्वारा सन् **1820** से **1830** तक सतनाम आन्दोलन के तहत चलाये उनके **बौद्धिक क्रान्ति** (Intelectual War) का ही परिणाम है कि सन् **1825** में पहली बार अंग्रेज शासकों द्वारा शिक्षा का द्वार सभी वर्गो के लिये खोला गया। पिण्डारी प्रथा से समाज को मुक्त कर **700** से ज्यादा गांव के जमीनदार रहे। सूबेदारी प्रथा को समाप्त कर गुरू बालकदास जी को राजा गुरू की पदवी से नवाजा गया और गांव गांव में सभी समुदाय के लोग अपने जाति–धर्म को त्यागकर सतनाम आन्दोलन में शामिल होकर सतनामी कहलाये। अस्सी साल बाद समाज को संगठित करने के लिए दादा नकुल ढीढ़ी जी ने पहली बार **18** दिसम्बर सन् **1938** को अपने ग्राम भोरिंग (महासमुंद) में गुरू घासीदास जयंती का शुरूआत किया और सन् **1961 में** फागुन शुक्ल पंचमी, छठमीं, सप्तमी को तीन दिवसीय **गिरौदपुरी मेला** लगाकर समाज को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया। सन्त गुरूओं के अलावा, राजमहंतों, बुद्धिजीवि सामाजिक कार्यकर्ताओं, कई सामाजिक संगठनों ने भी इस दिशा में अपने अपने तरीको से प्रयास किये हैं, भुलाया नहीं जा सकता जिसकी मलाई आज कुछ लोग खा रहे है।

आज **गुरू बालकदास** के **बलिदान** को **सार्थक** बनाने हेतु उनके **सतनाम आंदोलन** को त्वरित गति से जन –जन तक प्रचार– प्रसार करने की आवश्यकता है। मूलनिवासी समाज को संगठित करना समय की जरूरत है जिसके लिए त्याग व बलिदान की आवश्यकता है। प्रतिस्पर्धा के दौर में अब समाज को भक्ति से बहुत आगे शक्ति मार्ग की ओर ले जाना जरूरी है। हम साल में एक बार गुरू घासीदास जयंती के अवसर पर मिलते हैं, दूसरा केन्द्र बिन्दु गिरौदपुरी का मेला है। शेष समय हम बाजार की सड़ी गली परंपराओं से गुजारा करते है जिससे समाज प्रादूषित हो रहा है। यदि मानसिक प्रादूषण से बचना है तो हमे बार– बार मिलते जुलते रहना होगा, ताकि प्रकृति के अनुरूप हम अपना सतधर्म व प्राचीन सतनाम संस्कृति को सुदृढ़ बना सके। ज्ञान का पन्थ कृपाण की धार को अमली जामा पहनाते हुए संगठित समाज के लिए हमें वैचारिक एकरूपता स्थापित करना जरूरी है ताकि हम मान– सम्मान के साथ अपना **हक –हुकुमत** हासिल कर सकें।

कर्नल इग्नू के शब्दों में ः- 'अगर गुरू बालकदास जी **10-15** साल और जिंदा होते तो संपूर्ण छत्तीसगढ़ सतनाम–मय होता।' आइये आज गुरू बालकदास के बलिदान को सार्थक व उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का हम सब तन मन धन से संकल्प लेते है कि ः हम तब तक चैन से नहीं बैठेगे, जब तक हमारा पूरा छत्तीसगढ़ सतनाम–मय नहीं हो जाता, ताकि यहॉ का हर बच्चा– बच्चा प्रेम और भाईचारा के साथ, रूढ़िवाद व अंधविश्वास का अंत करते हुए, भय और भ्रम से मुक्त, शोषण रहित समाज व्यवस्था के निर्माण में भागेदारी बन सके।

विनीत ः- समस्त सतनामी समाज (स्वागत ट्रस्ट रजि. 4250)